योग कोश भाग-१ (फोल्डर नं. ९६०२८)

सम्पादक – श्रीचन्द चोरड़िया

मुख्य टाइटल
समर्पण
संकलन-सम्पादन में प्रयुक्त ग्रंथों की संकेत-सूची
जैन वाङ्मय का दशमलव वर्गीकरण
०४ जीव परिणाम का वर्गीकरण
दो शब्द
प्रकाशकीय
भूमिका
प्रस्तावना
आशीर्वचन
विषय-सूची
शब्द विवेचन ---------- १
शब्द व्युत्पत्ति ---------- १
प्राकृत में जोग शब्द की व्युत्पत्ति ---------- १
पाली में योग शब्द की व्युत्पत्ति ---------- १
संस्कृत में योग शब्द की व्युत्पत्ति ---------- २
विभिन्न भाषाओं में जोग शब्द के विभिन्न अर्थ---------- २
प्राकृत भाषा में जोग शब्द के अर्थ ---------- २
पाली भाषा में योग शब्द के अर्थ ---------- ३
संस्कृत भाषा में योग शब्द के अर्थ ---------- ३
योग शब्द के पर्यायवाची शब्द ---------- ३
सविशेषण ससमास सप्रत्यय जोग शब्द की परिभाषा ---------- ६
परिभाषा के उपयोगी पाठ ---------- ६७
वीर्यान्तराय कर्म का क्षय-क्षयोपशम ---------- ६७
लेश्यासहित वीर्य-पराक्रम योग है ---------- ६७
योग परिणाम-जीव परिणाम का भेद ---------- ६७
द्रव्य योग पुद्गल है ---------- ६८
योग मूल प्रत्यय हैं---------- ६८
पायाश्रव का कारण ---------- ६८
योग कर्म का निमित्त है ---------- ६८
योग अजीव द्रव्य परिणाम है ---------- ६९
योग क्षीरास्रव आदि लब्धकलाप है ---------- ६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

योग आस्रव द्वार है -- ६९
योग मार्गणा का एक भेद है -- ६९
योग सत्य पर्याप्ति का एक भेद है -- ६९
योग द्वार का एक भेद है -- ७०
योग बंध का कारण --- ७०
मनोयोग की परिभाषा -- ७०
सत् मनोयोग की परिभाषा -- ७१
असत्य मनोयोग की परिभाषा --- ७२
सत्यमृषा मनोयोग की परिभाषा--- ७३
असत्यामृषा मनोयोग की परिभाषा -- ७३
वचनयोग की परिभाषा --- ७४
सत्यवचन योग की परिभाषा -- ७५
असत्य वचन योग की परिभाषा-- ७५
सत्यमृषा वचन योग की परिभाषा -- ७५
असत्यामृषा वचनयोग की परिभाषा --- ७५
सत्यवचन योग की परिभाषा -- ७६
मृषावचन योग की परुभाषा --- ७६
सत्यमृषा वचन योग की परिभाषा -- ७६
असत्यामृषावचन योग की परिभाषा --- ७६
काययोग के लक्षण (परिभाषा) --- ७७
औदारिक मिश्र काययोग की परिभाषा --- ७७
औदारिक मिश्र काययोग की परिभाषा --- ७८
वैक्रिय काययोग की परिभाषा -- ८०
औदारिक काययोग की परिभाषा ---८१
वैक्रियमिश्र काययोग की परिभाषा --- ८२
आहारक काय योग की परिभाषा --- ८३
आहारकमिश्र काययोग की परिभाषा -- ८३
कार्मण काययोग की परिभाषा -- ८४
सत्य मनोयोग का लक्षण -- ८६
असत्य मनोयोग के लक्षण -- ८६
सत्यमृषा मनोयोग के लक्षण -- ८७
असत्यामृषा मनोयोग के लक्षण -- ८७
सत्य वचनयोग का लक्षण --- ८७
मृषा वचनयोग का लक्षण -- ८७
सत्यमृषा वचनयोग के लक्षण -- ८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असत्यामृषा वचनयोग का लक्षण -- ८७
औदारिक काययोग का लक्षण -- ८८
औदारिकमिश्र काययोग का लक्षण-- ८८
वैक्रिय काययोग का लक्षण -- ८८
वैक्रियमिश्र काययोग का लक्षण -- ८८
आहारक काययोग का लक्षण -- ८८
आहारकमिश्र काययोग का लक्षण -- ८९
कार्मण काययोग का लक्षण -- ८९
परिभाषा के उपयोगी पाठ (आगम सम्मत) -- ८९
द्रव्ययोग की परिभाषा के उपयोगी पाठ (वर्ण-गंध-रस-स्पर्श) ---------------------------- ८९
पुदगल भी वर्ण-गंध-रस-स्पर्शी हैं अतः द्रव्ययोग पुदगल हैं ------------------------------ ८९
द्रव्ययोग पुदगल हैं अतः पुदगल के गुण भी द्रव्ययोग में हैं ------------------------------ ८९
योग और गुरु-लघु हैं -- ९०
द्रव्ययोग गुरु-लघु-अगुरु-लघु हैं -- ९०
द्रव्ययोग अजीवोदय निष्पन्न भाव हैं क्योंकि जीव द्वारा ग्रहण होने के बाद द्रव्य योग प्रायोगिक परिणमन होता हैं-- ९०
द्रव्ययोग जीव ग्राह्य हैं --- ९१
द्रव्ययोग चतुस्पर्शी भी हैं, अष्टस्पर्शी भी हैं -- ९१
द्रव्ययोग अनंतस्पर्शी हैं -- ९१
द्रव्ययोग असंख्यात प्रदेशी क्षेत्र अवगाह करता हैं ---------------------------------- ९१
द्रव्ययोग की अनंत वर्गणा होती हैं -- ९१
द्रव्ययोग के असंख्यात स्थान हैं -- ९१
भावयोग की परिभाषा के उपयोगी पाठ -- ९१
भावयोग जीव परिणाम हैं -- ९१
भावयोग अवर्णी-अगंधी-अरधी अस्पर्शी हैं -- ९१
भावयोग अवर्णी-अगंधी-अरधी अस्पर्शी हैं तथा जीव परिणाम हैं अतः जीव हैं ----------------- ९१
भावयोग अगुधलघु हैं -- ९२
भावयोग उदय निष्पन्न भाव हैं -- ९२
विभिन्न आचार्यो द्वारा की गई परिभाषा -- ९२
योग के भेद -- १०४
दो भेद-- १०४
द्रव्य और भाव -- १०५
प्रशस्त-अप्रशस्त -- १०५
शुभ-अशुभ -- १०५
योग परिणाम के भेद -- १०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

योग के तीन भेद ---------- १०५
जीव और प्रयोग---------- १०६
प्रयोग के चार भेद ---------- १०६
योग के पन्द्रह भेद ---------- १०६
प्रयोग के पन्द्रह भेद ---------- १०७
ऐकांतानुवृद्धि योग का स्वामित्व---------- १०७
उपपाद योग का स्वामित्व ---------- १०७
परिणाम योग का स्वामित्व---------- १०७
वचन योग के भेद---------- १०८
मनयोग के भेद ---------- १०८
सत्य (वचनयोग(के भेद ---------- १०८
मृषा वचनयोग के भेद ---------- १०८
सत्यमृषा वचनयोग के भेद ---------- १०९
काययोग के भेद ---------- १०९
योग पर विवेचन ---------- १०९
लेश्या और कर्म ---------- १२२
सलेशी और सयोगी ---------- १२२
योग आश्रव और लेश्या ---------- १२३
योग और प्रमाद आस्त्रव ---------- १२३
योग और लेश्या ---------- १२३
योग और निर्जरा ---------- १२३
अयोग संवर और भाव ---------- १२४
योग और आत्मा ---------- १२४
योग और धर्म-अधर्म ---------- १२४
योग आत्मा एक नहीं-अनेक हैं ---------- १२४
योग आत्मा और सावध-निरवध ---------- १२४
योग और भाव आत्मा ---------- १२५
योग आत्मा द्रव्य जीव नहीं हैं-भाव जीव हैं ---------- १२५
योग आत्मा और कर्म बंधन का टूटना ---------- १२५
योग और करनी ---------- १२५
अशुभ योग और मुनि ---------- १२५
योग आत्मा और सर्व उत्तर गुण ---------- १२५
योग आत्मा और देस उत्तर गुण ---------- १२५
योग आत्मा और निर्जरा ---------- १२६
योग आत्मा और कर्म ---------- १२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

योग और प्रमाद आस्त्रव -- १२६
योग आत्मा और भाव --- १२७
योग आत्या (अशुभ योग निन्दनीय भी हैं ।) -- १२७
योग आत्मा और सप्रदेशी-अप्रदेशी --- १२७
योग आत्मा और उपयोग --- १२७
योग आत्मा और कार्य रुप-व्यापार -- १२७
योग आत्मा और नियमा-भजना --- १२७
योग आत्मा और आहार --- १२८
योग और स्नातक निर्ग्रन्थ--- १२८
योग और गुणस्थान -- १२८
योग और आस्त्रव --- १२९
मिथ्यादृष्टि में कितने योग -- १२९
योग का नय और निक्षेप की अपेक्षा विवेचन -- १२९
नय की अपेक्षा योग का विवेचन --- १२९
वचन योग और मनोयोग पर नय की अपेक्षा विवेचन -- १३०
योग का निक्षेप की अपेक्षा विवेचन --- १३०
द्रव्य योग और भाव योग -- १३२
मनोयोग का मूल कारण --- १३४
वचनयोग का मूल कारण -- १३४
वैक्रियकाय योग की संभावना -- १३४
सयोगी केवीली के मनोयोग की संभावना -- १३४
योग स्थान -- १३५
द्रव्ययोग और स्थान -- १३७
भाव योग और स्थान -- १४०
योग स्थान प्ररुपणा के कारण -- १४०
द्रव्ययोग (प्रायोगिक) अजीव हैं, रुपी हैं--- १४१
द्रव्ययोग की स्थिति --- १४२
द्रव्ययोग और भाव -- १४२
योगस्थान के दस अनुयोग द्वार -- १४२
औधिक सयोगी जीवोंमें अल्पबहुत्व --- १४३
योग और द्रव्य परिणाम --- १४३
मनोयोगी और वचनयोगी तथा एक द्रव्य परिणाम --- १४३
काययोगी और एक द्रव्य परिणाम --- १४५
औदारिक काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -- १४६
औदारिकमिश्र काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -- १४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैक्रिय काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -- १४८
वैक्रियमिश्र काययोगी और एक द्रव्य परिणाम --- १४९
आहारक काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -- १५०
आहारकमिश्र काययोगी और एक द्रव्य परिणाम -- १५०
कार्मण काययोगी और एक द्रव्य परिणाम --- १५१
मनोयोगी और वचनयोगी और दो द्रव्य परिणाम --- १५२
सयोगी जीव और तीन द्रव्य परिणाम --- १५३
सयोगी जीव और चार द्रव्य परिणाम --- १५४
द्रव्ययोग को जीवग्रहण करता है -- १५४
सयोगी और द्रव्य-ग्रहण -- १५५
योगवर्गणा और लेश्या --- १५६
भाव योग (प्रायोगिक) अरूपी है जीव है -- १५६
भाव योग जीव परिणाम है -- १५६
भाव जोग की स्थिति--- १५६
भाव योग और भाव --- १५६
भाव योग और उपयोग -- १५७
भाव योग की चंचलता-अस्थइर योग --- १५७
भाव योग और वर्गणा --- १५८
योग और भाषा -- १५९
योग और परमपुण्य का उपार्जन -- १६०
प्रदेशबंध और योगस्थान -- १६०
प्रथम सम्यक्त्व को प्राप्त करनेवाला जीव और योग -- १६१
भाव योग-प्रकृति और प्रदेशबंध का हेतु --- १६१
भावयोग और निर्जरा -- १६२
भावयोग की परिभाषा -- १६२
भावयोग के भेद --- १६२
योग और संवर--- १६२
भावयोग परिणाम के भेद -- १६३
विभिन्न जीवों में योग परिणाम-- १६३
नारकियों में -- १६३
भवनपति देव में -- १६३
वाणव्यंतर देव में --- १६३
ज्योतिषी देव में --- १६३
वैमानिक देव में --- १६३
तिर्यंच में -- १६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृथ्वी काय में ---------- १६४
अप्काय में ---------- १६४
तेउकाय में ---------- १६४
वायुकाय में ---------- १६४
वनस्पतिकाय में ---------- १६४
द्वीन्द्रिय में ---------- १६४
त्रीन्द्रिय में ---------- १६४
चतुरिन्द्रिय में ---------- १६४
तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ---------- १६५
मनुष्य में ---------- १६५
योग और जीव ---------- १६५
योग की अपेक्षा जीवन के भेद ---------- १६५
जीवों के दो भेद ---------- १६५
जीवों के तीन भेद ---------- १६६
जीव के चार भेद ---------- १६६
योग की अपेक्षा जीव की वर्गणा ---------- १६६
विभिन्न जीवों में योग ---------- १६६
औधिक जीव में ---------- १६६
औधिक अपर्याप्त जीवों में ---------- १६८
औधिक पर्याप्त जीवों में ---------- १६९
औधिक नारकी में ---------- १७०
औधिक नारकी अपर्याप्त जीवों में ---------- १७१
औधिक नारकी पर्याप्त जीवों में ---------- १७२
प्रथम पृथ्वी के नारकी में ---------- १७२
प्रथम पृथ्वी के अपर्याप्त नारकी में ---------- १७२
प्रथम पृथ्वी के पर्याप्त नारकी में ---------- १७२
द्वितीय पृथ्वी के नारकी में ---------- १७३
द्वितीय पृथ्वी के अपर्याप्त नारकी में ---------- १७३
द्वितीय पृथ्वी के नारकी में ---------- १७३
द्वितीय पृथ्वी के अपर्याप्त नारकी में ---------- १७३
द्वितीय पृथ्वी के पर्याप्त नारकी में ---------- १७४
तृतीय औधिक नारकी में ---------- १७४
तृथीय पृथ्वी के अपर्याप्त नारकी में ---------- १७५
तृतीय पृथ्वी के पर्याप्त नारकी में ---------- १७५
चतुर्थ पृथ्वी औधिक नारकियों में ---------- १७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थ पृथ्वी अपर्याप्त नारकियों में -- १७५
चतुर्थ पृथ्वी के पर्याप्त नारकियों में -- १७६
पंचम पृथ्वी के औघिक नारकियों में -- १७६
पंचम पृथ्वी के अपर्याप्त नारकियों में -- १७६
पंचम पृथ्वी के पर्याप्त नारकियों में -- १७६
षष्ठम पृथ्वी के औधिक नारकियों में-- १७६
षष्ठम पृथ्वी के अपर्याप्त नारकियों में -- १७७
षष्ठम पृथ्वी के पर्याप्त नारकियों में -- १७७
सप्तम पृथ्वी के औधिक नारकियों में -- १७७
सप्तम पृथ्वी के पर्याप्त नारकियों में -- १७८
सप्तम पृथ्वी के अपर्याप्त नारकियो में -- १७८
औधिक तिर्यंचों में --१७८
अपर्याप्त तिर्यंचों में -- १७९
पर्याप्त तिर्यंचों में -- १७८
औधिक एकेन्द्रियों में -- १७९
अपर्याप्त एकेन्द्रियों में -- १८०
पर्याप्त एकेन्द्रियों में -- १८०
सूक्ष्म एकेन्द्रियों में -- १८०
अपर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रियों में -- १८०
पर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रियों में -- १८०
लब्धि अपर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रियों में -- १८०
निर्वृत्ति पर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रियों में -- १८०
बादर एकेन्द्रियों में --१८१
बादर अपर्याप्त एकेन्द्रियों में --१८१
पर्याप्त बादर एकेन्द्रियों में --१८१
लब्धि अपर्याप्त बादर एकेन्द्रियों में --१८१
निर्वृत्ति पर्याप्त बादर एकेन्द्रियों में --१८१
पृथ्वीकाय में -- १८२
अपर्याप्त पृथ्वीकाय में -- १८२
पर्याप्त पृथ्वीकाय में -- १८२
सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -- १८२
अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -- १८२
पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -- १८२
लब्धि अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -- १८२
निर्वृत्ति पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय में -- १८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय में ---------- १८३
बादर पृथ्वीकाय में ---------- १८३
अपर्याप्त बादर पृथ्वीकाय में ---------- १८३
पर्याप्त बादर पृथ्वीकाय में ---------- १८३
लब्धि अपर्याप्त बादर पृथ्वीका में ---------- १८३
निर्वृत्ति पर्याप्त बादर पृथ्वीकाय में ---------- १८३
अप्काय में ---------- १८४
अपर्याप्त अप्काय में ---------- १८४
पर्याप्त अप्काय में ---------- १८४
सूक्ष्म अप्काय में ---------- १८४
अपर्याप्त सूक्ष्म अप्काय में ---------- १८४
पर्याप्त सूक्ष्म अप्काय में ---------- १८५
लब्धि पर्याप्त सूक्ष्म अप्काय में ---------- १८५
निर्वृत्ति पर्याप्त सूक्ष्म अप्काय में ---------- १८५
बादर अप्काय में ---------- १८५
अपर्याबूदर बादर अप्काय में ---------- १८५
पर्याप्त बादर अप्काय में---------- १८५
लब्धि-अपर्याप्त बादर अप्काय में ---------- १८६
निर्वृत्ति पर्याप्त बादर अप्काय में ---------- १८६
तेउकाय में ---------- १८६
अपर्याप्त तेउकाय में ---------- १८६
पर्याप्त तेउकाय में ---------- १८६
सूक्ष्म तेउकाय में ---------- १८७
अपर्याप्त सूक्ष्म तेउकाय में ---------- १८७
पर्याप्त सूक्ष्म तेउकाय में ---------- १८७
लब्धि अपर्याप्त सूक्ष्म तेउकाय में ---------- १८७
निर्वृत्ति सूक्ष्म तेउकाय में ---------- १८७
बादर तेउकाय में ---------- १८७
अपर्याप्त बादर तेउकाय में ---------- १८८
पर्याप्त बादर तेउकाय में---------- १८८
लब्धि बादर तेउकाय में---------- १८८
निर्वृत्ति बादर तेउकाय में ---------- १८८
वायुकाय में ---------- १८९
अपर्याप्त वायुकाय में ---------- १८९
पर्याप्त वायुकाय में ---------- १८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूक्ष्म वायुकाय में -- १८९
अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय में --- १८९
पर्याप्त अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय में -- १८९
लब्ध अपर्याप्त अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय में -- १८९
निर्वृत्ति अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय में -- १९०
बादर वायुकाय में --- १९०
अपर्याप्त बादर वायुकाय में -- १९०
पर्याप्त बादर वायुकाय में -- १९०
लब्धि बादर वायुकाय में -- १९०
निर्वृत्ति बादर वायुकाय में -- १९०
वनस्पतिकाय में -- १९१
अपर्याप्त वनस्पतिकाय में -- १९१
पर्याप्त वनस्पतिकाय में -- १९१
प्रत्येक शरीर वनस्पतिकाय में -- १९१
अपर्याप्त वनस्पतिकाय में -- १९१
पर्याप्त वनस्पतिकाय में -- १९१
लब्धि अपर्याप्त प्रत्येक शरीर वनस्पतिकाय में -- १९२
निर्वृत्ति पर्याप्त प्रत्येक शरीर वनस्पतिकाय में --- १९२
साधारण वनस्पतिकाय में -- १९२
अपर्याप्त साधारण वनस्पतिकाय में --- १९२
पर्याप्त साधारण वनस्पतिकाय में -- १९२
सूक्ष्म साधारण शरीर वनस्पतिकाय में --- १९२
अपर्याप्त साधारण वनस्पतिकाय में --- १९३
पर्याप्त साधारण वनस्पतिकाय में -- १९३
उत्पल आदि दस प्रत्येक वनस्पतिकाय में -- १९३
शाली बीहि आदि वनस्पतिकाय में --- १९४
द्वीन्द्रिय में -- १९५
त्रीन्द्रिय में -- १९५
चतुरिन्द्रिय में --- १९५
असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में -- १९५
तिर्यंच पंचेन्द्रिय में --- १९६
तिर्यंच पंचेन्द्रिय स्त्री-जीव में --- १९६
मनुष्य में पन्द्रह प्रकार के प्रयोग -- १९७
मनुष्य में -- १९७
मनुष्यणी में --- १९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लब्धि अपर्याप्त मनुष्य में ---------- १९९
देव में ---------- १९९
देवी में ---------- १९९
भवनपति देव में ---------- २००
वाणव्यंतर देव में ---------- २००
ज्योतिषी देव में ---------- २००
भवनपति देवी में ---------- २००
वाणव्यंतर देवी में ---------- २००
ज्योतिषी देवी में ---------- २००
वैमानिक देव में ---------- २००
वैमानिक देवी में ---------- २००
वैमानिक देव के विभिन्न भेदो में ---------- २०१
सौधर्म ईशानदेव में ---------- २०१
सनत्कुमार माहेन्द्र देव में ---------- २०१
ब्रह्म-ब्रह्मोत्त देव में ---------- २०१
लांतव कापिष्ठ देवों में ---------- २०
शुक्र-महाशुक्र देवों में ---------- २०२
शतार सहस्रार कल्पवासी देवों में ---------- २०२
आनत-प्रामत-आरण-अच्युत कल्पवासी देवों में ---------- २०२
नौ ग्रैवेयक कल्पातीत देवों में ---------- २०२
नौ अनुदिश विमानवाली देवों में ---------- २०२
चार अनुत्तर विमानवासी देवों में---------- २०३
सर्वार्थ सिद्धि देवों में ---------- २०३
संज्ञी जीव में ---------- २०३
असंज्ञी जीव में ---------- २०४
सकायिक जीव में ---------- २०४
त्रसकायिक जीव में ---------- २०४
सइन्द्रिय जीव में ---------- २०५
अनिन्द्रिय जीव में ---------- २०५
सयोगी जीव में ---------- २०५
मनोयोगी में ---------- २०५
सत्य मनोयोगी में ---------- २०६
मृषा मनोयोगी जीव में ---------- २०६
सत्यमृषा मनोयोगी जीव में ---------- २०६
असत्यमृ मनोयोगी जीव में ---------- २०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वचनयोगी जीव में ---------- २०६
सत्य वचनयोगी जीव में---------- २०७
मृषा जीव में ---------- २०७
सत्यमृषा ---------- २०७
असत्यमृषा वचनयोगी जीव में ---------- २०७
काययोगी जीव में ---------- २०८
औदारिक काय योगी में ---------- २०९
औदारिक मिश्र काययोगी में ---------- २०९
वैक्रिय काययोगी में ---------- २१०
वैक्रिय मिश्र काययोगी में ----------२११
आहारक काययोगी में ----------२११
आहारक मिश्र काययोगी में ----------२११
कार्मण काययोगी में ----------२११
अयोगी में ----------२११
सयोगी में---------- २१२
स्त्री वेदी में ---------- २१२
पुरुष वेदी में----------२१२
नपुंसक वेदी में ---------- २१३
अपगतवेदी में ---------- २१४
सकषायी में ---------- २१४
क्रोध कषायी में ---------- २१५
मान कषायी में ---------- २१५
माया कषायी में ---------- २१६
लोभ कषायी में ---------- २१६
अकषायी में ---------- २१६
मति अज्ञानी में ---------- २१६
श्रुत अज्ञानी में ---------- २१६
विभंग अज्ञानी में ---------- २१७
मति ज्ञानी में ---------- २१७
श्रुत ज्ञानी में---------- २१७
अवधि ज्ञानी में ---------- २१७
मनःपर्यव ज्ञानी में ---------- २१८
केवल ज्ञानी में ---------- २१८
चक्षुदर्शनी में ---------- २१८
अचक्षु दर्शनी में ---------- २१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवधि दर्शनी में -- २१९
केवल दर्शनी में -- २१९
सलेशी में -- २२०
कृष्ण लेशी में -- २२०
नील लेशी में -- २२०
कापोत लेशी में -- २२१
तेजो लेशई में -- २२१
पद्म लेशई में -- २२२
शुक्ल लेशी में -- २२३
अलेशी में --- २२३
भवसिद्धिक में -- २२४
अभव्यसिद्धिक में -- २२४
आहारक में --- २२४
अनाहारक में --- २२५
सम्यग्दृष्टि में -- २२६
असंयत में -- २२८
संयत में -- २२८
निर्ग्रंथ में --- २३०
अश्रुत्वा केवली में -- २३१
श्रुत्वा केवली के होने वाले जीव के अवधि ज्ञान प्राप्ति करने की अवस्था में --------------------- २३१
किसी एक योनि से स्व-पर योनि में उत्पन्न होने योग्य जीवों में कितने योग ------------------- २३२
महायुग्म जीवों में योग -- २५७
लेशी महायुग्म में योग -- २५९
भवसिद्धिक महायुग्म में योग -- २६०
अभवसिद्धिक महायुग्म में योग -- २६१
महायुग्म द्वीन्द्रिय में योग -- २६१
महायुग्म तेइन्द्रिय में योग -- २६२
महायुग्म में चतुरिन्द्रि में योग -- २६२
महायुग्म असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्दर्िय में योग --- २६२
महायुग्म संज्ञी पंचेन्द्रि में योग -- २६२
सयोगी और गुणस्थआन की अपेक्षा योग -- २६७
एकेन्द्रिय में योग -- २६७
जीव समूहों में योग -- २६८
योग और जीव --- २६८
मनोयोग किसके होता है--- २६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असत्य मनोयोग-उभय मनोयोग किसके होता है -- २७०
वचनयोग किसके होता है --- २७
मृषावचनयगो-सत्य मृषा वचनयोग किसके होता है ------------------------------------- २७२
आहारक-आहारकमिश्र काययोग किसके होता है --- २७३
वैक्रिय वैक्रियमिश्र काययोग किसके होता है -- २७४
औदारिक काययोग किसके होता है --- २७५
कार्मण काययोग किसके होता है -- २७६
विविध योग जीव में-- २८०
एकयोगी -- २८९
विविन्न जीव और योग स्थिति --- २८९
सयोगी जीव की सयोगीत्व की अपेक्षा स्थिति --- २८९
सयोगी जीव अणाहारिक केवली -- २९१
लेश्या और योग का तादात्म्य --- २९१
सयोगी जीव और संवर की स्थिति -- २९२
प्रथमानुगम की अपेक्षाकृति --- २९२
संजयानुगम में क्षेत्रानुगम की अपेक्षा योगी जीवों की क्षेत्र-स्थिति ----------------------------- २९३
स्पर्शानुगम में संचित योगी जीवों का स्पृष्ट क्षेत्र -- २९३
अयोगी जीव अनाहारक होते हैं -- २९४
सिद्ध-योग व लेश्या रहित होते हैं -- २९४
विशेष जीवों में --- २९४
मकई आदि वनस्पतिकाय में --- २९४
अलसी आदि वनस्पतिकाय में -- २९५
बांस आदि वनस्पतिकाय में -- २९५
इक्षु आदि वनस्पतिकाय में -- २९५
सेडिय आदि तृष्ण विशेष वनस्पतिकाय में--- २९५
अभ्रुरूह आदि वनस्पतिकाय में -- २९६
तुलसी आदि वनस्पतिकाय में -- २९६
ताल-तमाल आदि वनस्पतिकाय में --- २९६
लीमड़ा, आम्र आदि वनस्पतिकाय में --- २९७
अगस्तिक आदि वनस्पतिकाय में -- २९७
बेंगन आदि वनस्पतिकाय में --- २९७
सिरियक आदि वनस्पतिकाय में-- २९८
पूसफलिका आदि वनस्पतिकाय में --- २९८
आलुक आदि साधारण वनस्पतिकाय में -- २९८
लोही आदि वनस्पतिकाय में --- २९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आय आदि वनस्पतिकाय में ---------- २९९
पाठा आदि वनस्पतिकाय में ---------- २९९
मासवर्णी आदि वनस्पतिकाय में ---------- २९९
पृथ्वीकाय में ---------- ३००
अप्काय में ---------- ३००
वनस्पतिकाय में---------- ३०१
तेउकाय में ---------- ३०१
वायुकाय में ---------- ३०१
द्वीन्द्रिय में ---------- ३०१
त्रीन्द्रिय में ---------- ३०१
चतुरिन्द्रिय में ---------- ३०२
नारकी में ---------- ३०२
संमुर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ---------- ३०२
जलचर संमुर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ---------- ३०२
स्थलचर संमुर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ---------- ३०२
खेचर संमुर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ---------- ३०३
गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ---------- ३०३
जलचर गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ---------- ३०३
स्थलचर गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ---------- ३०३
खेचर गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय में ---------- ३०४
मनुष्य में ---------- ३०४
संमुर्च्छिम मनुष्य में ---------- ३०४
गर्भज मनुष्य में ---------- ३०४
औधिक देव में ---------- ३०४
गुणस्थान के अनुसार जीव में ---------- ३०४
चौदह जीव-भेद के अनुसार जीव में ---------- ३०५
जीव और योग समपद ---------- ३०६
सयोगी जीव और अन्तर काल ---------- ३०७
जीव समूहो में कितने योग ---------- ३०९
पृथ्वीकायिक जीव समूहों में योग ---------- ३०९
अप्कायिक जीव समूहों में योग ---------- ३०९
अग्निकायिक जीव समूहों में योग ---------- ३०९
वायुकायिक जीव समूहों में योग ---------- ३०९
वनस्पतिकायिक जीव समूहों में योग ---------- ३०९
द्वीन्द्रिय जीव समूहों में योग ---------- ३१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रीन्द्रिय जीव समूहों में योग --- ३१०
चतुरिन्द्रिय जीव समूहों में योग --- ३१०
पंचेन्द्रिय जीव समूहों में योग -- ३१०
सयोगी जीव -- ३१०
सयोगी जीव और समपद -- ३१०
सयोगी जीव और प्रथम-अप्रथम ---३११
अयोगी जीव और अप्रथम ---३११
सयोगी जीव और चरम-अचरम ---३११
सयोगी जीव की सयोगीत्व की अपेक्षा स्थिति --- ३१२
सयोगी जीव का, सयोगी की अपेक्षा अन्तरकाल --- ३१२
मनोयोगी और वचनयोगी का एक जीव की अपेक्षा अनतरकाल ------------------------------- ३१२
काययोगी का एक जीव की अपेक्षा अन्तरकाल -- ३१४
औदारिक काययोगी तथा औदारिक मिश्रकाययोगी का एक जीव की अपेक्षा अन्तरकाल ------- ३१४
वैक्रिय काय योगी की एक जीव की अपेक्षा अन्तरकाल ------------------------------------- ३१५
वैक्रिय मिश्रकाय योगी का एक जीव की अपेक्षा अन्तरकाल ---------------------------------- ३१६
आहारक काययोगी तथा आहार-मिश्र-काययोगी का एक जीव भी अपेक्षा अन्तरकाल ---------- ३१८
कार्मणकाय योगी का एक जीव का अपेक्षा अन्तरकाल -------------------------------------- ३१९
अयोगी का अन्तरकाल --- ३२०
अध्ययन, गाथा, सूत्र आदि की संकेत सूची -- ३२०
संकलन सम्पादन अनुसंधान में प्रमुख ग्रन्थों की सूची -- ३२१
वर्धमान जीवनकोश, द्वितीय खण्ड पर प्राप्त समीक्षा --- ३२३
वर्धमान जीवनकोश प्रथम खण्ड पर प्राप्त समीक्षा --- ३२४
मिथ्यात्वी का आध्यात्मिक विकास पर प्राप्त समीक्षा -- ३२७
लेश्या-कोश पर विद्वानों की सम्मति --- ३३०
क्रिया कोश पर प्राप्त समीक्षा --- ३३२
वर्धमान जीवन कोश पर प्राप्त समीक्षा --- ३३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org